ललन कुमार कामत

सम्पर्क-
ललमनियाँ, मरौना, सुपौल।
गोल इंग्लिश गार्डेन निर्मली।

किछु विहनि आ लघु कथा-

अप्पन माए-बाप

सुनील जीकेँ दूटा सन्तान। सौरभ दस सालक जे पाँचमा कक्षामे आ छोटका सुमन छह सालक जे पहलामे मेडोना स्कूल, कटहल वाड़ी दरभंगामे पढ़ैए। स्कूल घरेक बगलमे छै। सुनीलजी अकाशवाणी दरभंगामे नौकरी करै छैथ।
हम सुनील जीक दुनू बच्चाकेँ घरपर जा ट्यूशन पढ़बै छी। हुनकर कनियाँ मंजू हरिदम बच्चाक कपड़ा-लत्ता, वर्तन-बासन आ आनो-आन घरक काम-काजमे ओझराएल रहै छथिन। सुनीलजी नौ बजे भोरे निकलै छैथ अपना काजपर। दू बजे खेनाइ खाइले अबै छैथ। फेर रातिमे दस बजे घर अबै छैथ।
चारि बजे बेरू पहरमे हम पढ़बैले सभ दिन जाइ छी। आइयो गेलौं। कनीएकालक पछाति मंजू चाह लऽ कऽ हमरा लग एली। चाहक कप पकड़ा बच्चाक बदमाशीक उपराग कम मुदा काजक बेस्तताक पोथी खोलि छनेमे संसारक परेशानीक पाठ पढ़ि गेली। फेर काजमे एना लागि गेली जेना टाँग-पर-टाँग नै पड़ैए।
छुट्टीक समैमे सुनीलजी सेहो घरक काम-काजमे बेस्त रहै छैथ। दुनू गोटेक परिवारक प्रति समरपन देखि हमरा बुझाइत रहैए जे ऐ छोट

परिवारक अलाबे हिनका सभकेँ ऐ संसारमे किछु ने छैन। अचानक गामसँ हुनका फोन एलैन जे हुनकर पिताजी सिरियस छथिन। सुनीलजी ऑफिसमे छुट्टी लेल दरखास दऽ गाम बिदा भेला। गाम जा पिता जीक संग माएकेँ सेहो संगे दरभंगा आनि लेलैन। बाबूजीकेँ असपतालमे डाक्टरसँ जँचबौलैन। डाक्टर कहलकैन-

“अहाँक पिताजी केँ टी.बी. भऽ गेलैन हेन।”

“आब की उपए अछि डाक्टर साहैब?” सुनीलजी पुछलखिन।

“नौ मासक दबाइक कोर्स अछि। देख-रेखमे समैपर दबाइ चलबए पड़त।”

सुनीलजी, ऑफिस जा अदहा दिनक छुट्टी छह मासक लेल दरखास लगा माए-बापक सेवामे लीन भऽ गेला।

कटहल वाड़ी स्थित नीज अवासपर माए-बाबू रहए लगला। मुदा सप्ताहमे दू दिन असपतालमे जाए-आबए पड़ैन।

आब मंजू पहिनेसँ बेसी परेशान रहए लगली। एक दिन मंजूक वार्ता हमरासँ भेल। बजली-

“की कहूँ सर, एक्को-रती मन नै होइए जे ऐ घरमे रही।”

हम पुछलयैन-

“किए, की भेल?”

“तेतबे घरक काज तेतबे धिया-पुताक काज आ तैपरसँ माए-बाबूजी माथक बोझ बनि गेल छैथ। अपने जे छैथ ओ एकोटा काज नै सम्हारै छैथ।”

हम कहलयैन-

“अहिना होइ छै, काम-धाम तँ सभ दिन लगले रहै छै। मुदा माए-बापक सेवा सेहो ऐ जीवनमे जरूरी छै।”

मंजूकेँ जेना हमर उपदेश एक्को-रत्ती नै सोहेलैन। तमतमाइत बजली-

"मास्टरजी, हमरा अहाँ नै सिखाउ। अहाँकेँ दुनियाँ-दारीक थाह नै चलल अछि अखन। सासु-ससुर हमर ओहेन अदरगर नै छैथ।"

मंजूक ई बात सुनि हम स्तब्ध रहि गेलौं। मुँहक बात मुहेँमे रहि गेल। संच-मंच बच्चा सभकेँ पढ़बए लगलौं। मुदा मंजू बड़बड़ाइत रहली-

"चौबीस घण्टा काजे-काज। सभ अढ़बैए बला। ऐ घरमे रहैक मन एकोरती नै होइत अछि। जेतबे घरक काम-काजसँ माथा दुखाइत रहैए आ तैपर सँ बुढ़बा-बुढ़िया माथ भुकबैत रहै छैथ।"

तही बीच बुढ़हाक खौंखी जोर-जोरसँ सुनि पड़ल। खौंखी करैत-करैत बदहाल भऽ कहैर-कहैर कऽ बाजए लगला-

"कनहौलीवाली, सुनीलक माए, केतए छी? ओहू बुढ़ियाकेँ जेना हमरा लग नीक नै लगै छै। जेना हम काटैले दौड़ै छिऐ।"

बुढ़हाक हफनीक अवाज फेर सुनि पड़ल-

"कनियाँ छी हे, लहानवाली, ऐ सौरभक माइ? बाप रे बाप! कोइ ने सुनैए।"

मंजू बड़बड़ाइत घुमली-

"मरबो ने करैए बुढ़ा जे हमर सिरक बोझ हटैत। जानि ने कोन पापक फल छी।"

सुनील जीक घरक ई कथा रोजक भऽ गेल। एक दिन अनायास हुनकर घरक हवा एकदम शान्त बुझना गेल। छतक चौकीपर जाजीम बिछौल छल। दुनू बच्चा ओइपर आबि पढ़ैले बैसल। हम पलास्टिकक कुरसी खिंच बैसलौं। कनीए काल पछाति मंजू पलेटमे जलपान आ कपमे चाह लऽ मीठ-मीठ चालिमे मुस्कियाइत एली।

हमरा बुझाएल जे आइ मंजूजी तिरपित छैथ। इच्छा भेल जे ऐ खुशीक कारण जानी। पुछलयैन-

"भाभीजी, आइ अपने बड़ खुश नजैर अबै छी, की बात छिऐ?"

"हँ, खुशी किए ने हएब। आइ हमर अपन माए-बाबू गामसँ एला अछि। खुशी तँ सोभाविक छै।"

मंजुक ई बात सुनि खुश तँ भेबे केलौं जे माए-बापक दर्शनसँ सोभाविक खुशी जे हेबक चाही से हिनको भेलैन। मुदा दुख सेहो भेल। दुख ई भेल जे आखिर सासु-ससुरक विषयमे जे मिथिलाक दर्शनमे नारी लेल बतौल गेल छै जे अपन माए-बापसँ बढ़ि कऽ सासु-ससुर होइ छै से हिनकामे किए नै छैन।OOO

सम्पर्क- ललमनियाँ, सुपौल।

स्कूलक फीस

मानस तीन सालक छल तहिये माइक देहावसान भऽ गेलैन। पिताजी गामक मुखिया छथिन। समाजक कहलापर दोसर बिआह केलैन। लबकी कनियाँ थोड़-बहुत पढ़ल-लिखल, सोभावशील, विचारू आ सुन्दर भेलैन। तीन सालमे मुखिया जीकेँ दूटा सन्तान और भेलैन। चन्दन आ नन्दन। नन्दनक जन्मक छह मासक पछाति मुखियाजी स्वयं भगवानक प्रिय भऽ गेला। एकबेर फेर परिवारसँ लऽ कऽ गाम भरिमे शोकक लहैर पसैर गेल।

मुदा मुखियानि शोकक सागरसँ बाहर आबि तीनू बच्चाकेँ लालन-पालनक लेल फेरसँ अपन दिन-दुनियाँमे लीन भऽ गेली। अपना सुइध-बुइधसँ बच्चा सबहक बरबैर लार-प्यारसँ पोसैमे कोनो कसैर नै छोड़ै छथिन।

मानस आब दस सालक भऽ गेल। प्राइवेट स्कूलक चारिम कक्षामे पढ़ैए। महिनाक पाँच तारीख तक सभ बच्चा अपन-अपन फीस जमा करैए। लेट-सेट छह तारीख धरि विलम शुल्कक संग जमा करब आवश्यक अछि। नै देने नाओं काटि देल जाइ छै। मानस प्रत्येक महिना अतिरिक्त शुल्कक संग जमा करैत छल। मुदा ऐ मास सेहो नै भेलै। पीठपर पोथीक बैग टाँगि, अनजान चालिमे डेल उठबैत, एमहर-ओम्हर तकैत स्कूल दिस विदा भेल। घरसँ लगभग एक किलो मीटर भरि पूब स्कूल छै। बाटेमे मानसक मन फीपर गेलै। आइ तँ छह तारीख छी। मुदा फीस तँ अछि नै। सरजी की कहता की नै।

असमंजसमे पड़ल मानस स्कूलक हाता धरि पहुँच गेल। हातासँ आगू नै बढ़ि बाहरेमे ठाढ़ रहल। किछु काल पछाति आपस घूमि गेल।

अगल-बगलमे डबरा-डुबरीमे पहिल मानसुनक बर्खासँ पानिक जमाव सभकेँ देखैत, बेंगक टरटरेनाइ आदिकेँ देखैत-सुनैत लीन भऽ गेल। ओमहर स्कूलमे सरजी हाजली मिलौला पछाति मानसक अनुपस्थितिपर बजला-

“मानस आइ नै एलौं?”

एकटा बालक कहलकैन-

“आएल तँ छल मानस, साइत बाहरमे हएत।”

सरजी-

“आइ फेर फीस नै अनने होएत।”

फेर वएह बालक बाजल-

“सरजी, अहाँ कहब तँ हम मानसकेँ बजा आनब।”

सरजीक धियान मुद्रापर गेल। बजला-

“जो, आ कहि दिहैन जे आइ जँ फीस नै लऽ कऽ आएत तँ दोबर फीस लगतै।”

बालकक नाओं सौरभ अछि। सौरभ स्थानीय बेवारीक बेटा छी। सौरभ केर घर स्कूलक बगलेमे छै। मानससँ मित्रता छै। मानस केर प्रति सहायताक भाव सेहो रहै छै। सौरभ विदा भेल मानसकेँ तकैले। बाहर जा एमहर-ओम्हर नजैर दौड़ौलक। मानसपर केतौ नजैर नै पड़लै। कनी और आगू बढ़ल। देखलक एकटा गाछक छाँहमे ठाढ़ किछु देखि रहल अछि। देखिते चिकैर कऽ सोर पाड़लक-

“मानस, की करै छी। एमहर आ।”

मानस अवाज सुनि-ताकि लग आबि बाजल-

“आइ हम स्कूल नै जेबौ। सरजीकेँ नै कहिहैन जे मानस गाछ तर अछि।”

सौरभ-

“जौं तूँ स्कूल नै जेमेँ तँ एतए की करै छीही। घरेपर रहितेँ।”

मानस-

"तूँ नै बुझै छीही। घरपर जँ रहब तँ माइक सैकड़ो प्रश्नक उत्तर दिअ पड़त। घरमे पाइ-कौड़ी नै छै। माए कहलक जे दू-चारि दिनमे पाइ देबौ।"

सौरभ स्कूलक निअमसँ अवगत अछि। जौं छह तारीख तक फीस जमा नै हेतै तँ स्कूलसँ निकालि देल जाइ छै। ई सभ सोचि मानसकेँ कहलकै-

"स्कूलक निअम नै बूझल छौ जे केते कड़ा छै। माएकेँ नै कहने छीही?"

मानस किछु बाजल नै, आ ने किछु फुरेलै। चुप रहल। सौरभ घूमि कऽ स्कूल चलि गेल।।OOO

सम्पर्क- ललमनियाँ, सुपौल।

दस हजरिया नोट

हम अपन इलाकामे जानल पहचानल पेन्टर छेलौं। पेन्टिंगमे बेदरेसँ लगाव रखैक कारण, भाड़ी-सँ-भाड़ी चित्र पल भरिमे बनेनाइ हमरा लेल असान छल।

एकटा लङोटिया दोस्त छल धीरेन्द्र, किराना दुकानदार आ जातिक भूमिहार। बखत-कु-बखतपर हम एक दोसरकेँ मदैत निस्वार्थ भावसँ करै छेलौं। एक दोसरकेँ विशुद्ध दोस्त मानै छेलौं। लोक सभ हमरा ऐ दोस्तीकेँ देखि हैरत रहै छल। हैरत ऐ खातिर रहै छल जे हमर दोस्त धीरेन्द्र भुमिहार जातिक छल। केते लोग कहैतो छल-

"की रौ, भुमिहारसँ दोस्ती केलँह..., ठीकसँ रहिहेँ. कहीं भुमिहारी दाउमे फँसलह तँ बुझियैहैन!"

मुदा ऐ बातपर हम कोनो कान-बात नै दइ छेलौं। एकदिन जहिना हम रंग-ब्रशक झोरा लऽ कऽ केतौ काजपर विदा भेल छेलौं आकि जनक काका दलानपर सँ चिकैर कऽ बजा कहलथि-

"रौ, सुन कहै छियौ तूँ जौं भुमिहारसँ दोस्ती केलँह तँ भुमिहारी दाउ एकोटा सिखलेँ आकि नै?"

हमरा जिज्ञासा भेल आ पुछलयैन-

"काका, भुमिहारी दाउ केकरा कहै छै हौ?"

"हम जँ बुझितौं तँ हमहीं ने तोरा सिखा दैतिऔ? लोक बाजै छै जे भुमिहारी दाउ बड़ पेंचिदा होइ छै।"

हम भरि बाट गुन-धुन करैत एलौं 'मुदा ई कोन दाउ छी? जे लोक सभ दोसक संग देखि पुछैत रहैए? से नै तँ, आइ हम दोसेसँ ऐ बिषयमे पुछि कऽ रहब।

दुपहरियाक रौदामे हम कोसी प्रोजेक्टक देवालपर एकटा विज्ञापन लिखैत रही संयोगसँ तखने पाछूसँ मोटर साइकिलक सीटीक अवाज पिपियाएल! हम रंगक डिजाइन बनबैमे मगन रही। मने-मन तामससँ देह बहिर भऽ गेल! 'के एहेन दुष्ट छी जे डिस्टर्ब करैए?' मुदा ताकब केना? जौं ताकब तँ डिजाइन खराप भऽ जाएत। लगल हाथ छोड़ि, ताकलौं। अवाक् रहि गेलौं! वएह भुमिहार दोस धीरेन्द्र छल। दोस्तीमे कनी-मनी शैतानी तँ चलिते रहैत छल। मन्द मुस्कान चेहरासँ सेहो छुटल। तैबीच धीरेन्द्रक नजैर पेन्टिंगपर पड़ल आ प्रशंसा करए लगल। मुदा हमर प्रशंसा, जे हमरे मुँहपर बाजल जाइत अछि! नीक नै लगल, अंग्रेजीक एकटा मुहावरा मन पड़ि गेल, 'रेस्ट ऑन वन्स लॉरेल्स' अर्थ अछि, 'अप्पन ख्यातिसँ संतुष्ट नै रहक चाही,' हम विनम्रतासँ कहलयैन-

"दोस, अहाँक ऐ प्रशंसासँ हम खुश नै छी। हम मात्र एकटा छोटका कलाकार छी, खरचा-पानि चलेबा लेल ई काज करै छी।"

तैबीच हमरा मन पड़ल 'भुमिहारी दाउ'

पुछलयैन-

"दोस, लोक कहैए जे भुमिहारी दाउ बड़ नीक होइ छै, हमरो सिखा दिअ।"

धीरेन्द्र पहिले तँ हमरा बातपर धियान नै देलक मुदा बेर-बेर जिद्द केलापर सोचए लगल, कनीकाल सोचि कऽ बाजल-

"दाउ तँ अहाँकेँ सिखा देब मुदा बदलामे किछु दिअ पड़त।"

हम पुछलियहन-

"कथी देबए पड़त? बाजू।"

धीरेन्द्र फेर बजला-

"अहाँकेँ एकटा दस-हजरिया नोटक पेन्टिंग बना कऽ हमरा दिअ पड़त।"

हम बजलौं-

“रूपैआक नोट! दस-हजरिया आ पँच-हजरिया की, जौं पेन्टिंगेसँ बनाएब तँ किए नै? जरूर बना देब। कनीए दिन रूकू फुरसति हुअ दिअ तँ छापि देब।”

पेन्टिंग हमर ईश्वरीय देन छल, बेदरेसँ अनेक प्रकारक चित्र पाड़ै छेलौं, स्कूलमे सरजीकेँ यार-दोस्तक आ संग पढ़ैत लड़कियो सबहक। बाबूजी सधारण किसान छल, हमर पढाइ लेल पर्याप्त खर्चा नै रहैक कारण अध्ययनक संग उपार्जनक मार्ग अपनौने रहौं। अखन हम निर्मली आ आसपासक क्षेत्रमे जानल-पहचानल चित्रकार छी। कामक व्यस्तता हरिदम रहैए। ऐ व्यस्ततामे दोसक लेल दस-हजरिया नोट बनेनाइ हम साफे बिसैर गेलौं।

एकदिन हम नगर सेठक दोकानक बगलमे साइन बोर्ड बनबैत रही, तखने धीरेन्द्रक अवाज सुनि पड़ल। काम रोकि गद्दी लग हम ससैर कऽ एलौं, तही समैमे आउरो किछु जानल-पहचानल बेपारी सभ पहुँचल छल। धीरेन्द्र जोरसँ सभकेँ सुना कऽ हमरा कहैए-

“की दोस, हमर काम नै हेतै?”

हम चौंक गेलौं जे हमरा कोन काम कहने छैथ! पुछलयैन,

“कोन काज?”

“वएह दस हजारबला!”

हमरा मन पड़ि गेल दस-हजरिया नोट! मुड़ी हिला स्वीकृति दैत कहलयैन-

“ओऽ हाँ, हेतै, हेतै, किछुए दिन और रूकू।”

सेठजी नोटक गड्डी गीनैत-गीनैत, चेश्माक भीतरे-भीतर, रूपैआक बात सुनि हमरा दिस ताकए लगल। हम चुपचाप, काम करए लगलौं। हमरा एला पछाति, धीरेन्द्र सभ लग बाजल, जे ‘ई पेन्टर हमर दोस छी, हमरासँ दस हजार टाका लेने अछि, केतेक महिना भऽ गेल, मुदा टाका मांगलापर, आइ-काल्हि करैत, समए काटैए।’

समए बीतैत गेल, छह महिना-साल भरिक बाद, फेरि दोसर बेपारीक दोकानपर दस हजारक तकेजा केलक। हम दस-हजरिया पेन्टिंगक

नोट समझि टाड़ि देलौं। मुदा हमरा गेलाक पछाति धीरेन्द्र सभ लग बाजल फिरै छल जे साँचेमे ई हमर रूपैआ लेने अछि।

ऐ बातक दू बरख भऽ गेल। जेतए-तेतए लोक सभ हमरा कहए लागल-

"धीरेन्द्रक रूपैआ किए ने फड़िया दइ छिही! दोस-बोनक पैसा एते-एते दिन रखनाइ नीक बात नै छै।"

पहिले तँ हम असमंजसमे रहौं मुदा, जखन पता चलल जे धीरेन्द्र दस-हजरिया पेन्टींगक बदलामे दस हजार टाका लोक सभ लग बाजल फिड़ैए, हम अवाक् रहि गेलौ! केतेक गोटेकेँ समझेबाक परियासो केलौं ई बात, मुदा जेकरे कहिऐ वएह, बुड़िबक बनबए लगल-

'कलाकार भऽ कऽ एहेन नीयत तोहर नै हेबा चाही।'

हम चिंतित भऽ सोचए लगलौं, 'ई दोस्त नै छी, दुश्मन छी, एते भाड़ी फेरामे पड़ा देलक! केतएसँ एते टाकाक ओरियान करब!' हमर ओकाति हजार टाका जेना लाख टाकाक के बराबैर छल। बिना जमीन-जथा बेचने दोसर उपए नै छल।

कनीए दिनक पछाति, पंचैती भेल, पंचक फैसला भेल, कटि-मारि कऽ दू हजार सुइदकक संग बारह हजारक देनदारी ठहरौल गेलौं। लोक सभ बाजए नै दैत छल। जीवनमे एहेन बेज्जती कहियो नै भेल रहए। दस दिनक समए देल गेल।

टाकाक ओरियान नै भऽ रहल छल। कोनो गुंजाइश नै देखि, एकटा उपए सूझल, जमीन बेचु नै तँ, भरना लगाउ। एक बीघा जमीन भैयारीक फाँट पड़ल छल। बेचब तँ फेर कीनल नै हएत, से नै तँ भरने लगा देबाक चाही।

हजार टाकाक दरसँ बारह कठ्ठा खेत भरना लगेलौं, रूपैआ लऽ कऽ दोसक घर पहुँचलौं। दलानपर कियो नै छल असगरे बैस गेलौं, दोस्तीनीकेँ खबैर गेल। कनीकालक पछाति, दोस्तिनी एक हाथमे पानिक लोटा आ दोसर हाथसँ घोघ तानि, अदहा मुँह झाँपल अदहा देखाइत, आगूमे पानि बढ़ा देली। तामससँ तँ हमर देह बहिर छल,

सोचने छेलौं जे दोसकेँ किछु कहबनि, मुदा की करब! चोटपर दोस्तीनी पड़ि गेली। भाड़ीए मनसँ कहलयैन-

“दोसकेँ बजाउ आ कहियन जे अपन टाका लेता।”

कनी काल पछाति धीरेन्द्र हँसैत-हँसैत दलानपर एला। ई हँसी, हमरा हरियाएल घापर, नूनक लहैर जकाँ लागल। चुप चाप रूपैआक गड्डी देलिऐन, गिनला पछाति फेरसँ हमरे हाथमे धराऽ देलैन। हम चुपे छेलौं मुदा धीरेन्द्र बाजल-

“दोस, याद करू। अहाँ हमरा कहने छलिऐ ने भुमिहारी दाउ सिखबैले? यएह छिऐ भूमिहारी दाउ।”

एकबेर फेर दोसक ऐ बर्तावसँ हम चकित रहि गेलौं।OOO

(लोक कथाक पुनर्लेखन)

लगन

गोनर बेदरेसँ संगीतक प्रेमी अछि। दिवाली, दशहारा, सरोसती पूजा आ आनो-आन अवसैरपर गाममे नाटक होइक परचलन अछि। मुदा गोनरकेँ ओइ सभमे मौका कमे मिलैए। मौका ओकरे पहिल बेर मिलैए जे ओइमे चन्दा दइए। गोनरक पिता साधारण किसान छैथ। गोनरक पिताक दोस्त देबन पण्डित गाममे कीर्तनियाँमण्डली चलबै छैथ, तँए लोकसभ गबैया कहै छैन। गोनरकेँ संगीतसँ लगाउ देखि पिताजी केतेक बेर कहै छैन-

"गोनर, दोसक ऐठाम जा कऽ घड़ी-घण्टा हैरमुनियाँ किए ने सीख अबै छँह?"

आइ स्कूलमे शनिचराक पछाति सरजी गोनरसँ गीत गबौलैन आ खुश भऽ खुब प्रसंशो केलैन। स्कूलसँ अबैतकाल बाट भरि गोनर सोचैत आएल जे आइ देबन काकाक घर जा हैरमुनियाँ सीखनाइ शुरू करब। दुपहरियाक टहटहाइत रौदमे, सभ लोक घरे-घर सूतल-पड़ल, अराम करैत रहए मुदा गोनर, देबन पण्डितक घर बिदा भेल। देबन सभ दिन बेरूपहरमे अप्पन एकलौता पुत्र हरियाकेँ संग कऽ साज-बाजक संग रियाज करैत रहैथ। आब गोनरो संग दिअ लगलैन।

सप्ताहे दिनमे गोनर हरिमुनियाँक रीढ़ आ पटरीकेँ नीक जकाँ परेख लेलक आ सा रे गा मा पा पहिलुक धुन बजबए लगल। ई आकस्मिक आ तेज शुरूआत देखि देबन सोचमे पड़ि गेल, 'हमर हरिया बेदरेसँ साज-बाजक संग खेलैत आएल तैयो अखन धरि एतेक नै सीख सकल!

देबनके डाहक संग पक्षपातक भावना सक्कत भऽ आ अगिले दिनसँ गोनरकेँ दुआरि पहुँचते, साज-बाज समेटि रखि दैत रहए। एक-दू दिन गोनर जाइते रहल मुदा ओहिना घुमि कऽ आबि जाइत रहए। गोनर उदास तँ होइते रहए मुदा हताष आ निरास नै भेल, तँए संगीत सिखैक जीद्द मनसँ नै गेल।

साँझ पड़ैत सभ दिन, देबन चाह-पान करैले बजार जाइ छल। ई बात गोनर जनैत रहए, तँए साँझ होइते देबनक घर पहुँच कऽ, हरियाकेँ फुसला कऽ साज-बाज पसारि सीखए लगल। मुदा ईहो सीखनाइ तीने-चारि दिनक पछाति स्थाइ रूपे बन्न भऽ गेल। जइ दिन देबन पण्डित दुनू छौड़ाकेँ साज-बाज निकालि सिखैत देखि गेला। कड़गर फटकारो दुनूटाकेँ लगेलखिन आ सभटा साज-बाज समेटि कऽ संदूकमे बन्न कऽ देलखिन।

कहल जाइए जे समए आ लहैर केकरो इंतजार नै करैए। ई बात साँच भेल। गोनर ऐ दसे दिनमे जे किछु सिखने रहए वएह रामवाण भऽ गेल आ सक्कत अधार बनि, तारक गाछ सन बढ़ए लगल। कहल जाइए जे कोनो तरहक बुधि आ हूनर सिखैले निर्धारित समए नै होइए। जेतै-तेतै, चलैत-फिरैत गोनर सुर आ तानकेँ साधैत, गुनगुनाइत धूनमे रमल रहै छल। मुदा साँझ-भोर संगीतक अभ्यास केनाइ अप्पन दिनचर्या सेहो बना लेलक। टोल-टपड़ा आ गाममे जखन केतौ भजन-कीर्तन आकि नाच-गानक आयोजन होइत रहए तइमे गोनर बड़ी तत्परतासँ भाग लैत रहए। तइसँ गाम भरिमे लोकसभ गोनरकेँ गबैया कहए लगल।

गामक सटले शहर अछि। शहर छोटे सन अछि सुखी सम्पन्न लोक आ पैग-पैग बेपारीसँ लक हाकिमो-अफसर सभ एतए रहै छैथ। गोनरकेँ शहरमे केकरोसँ जान-पहिचान नै अछि। एकटा डाक्टर सुरेन्द्र नारायण नामक गण्यमान बेकती छथिन जे महिला कौलेजमे हिन्दीक सरकारी प्रोफेसर आ संगै-संग महिला कल्याण संस्थानक अध्यक्ष सेहो छथिन। संगीतक प्रेमी रहैक कारण साले-साल सांस्कृतिक कार्यक्रमक

आयोजन करबैत रहै छैथ। प्रोफेसर साहैबक एगो बेदरूकिया संगी जे दिल्लीमे नाट्य आ कला विभागक प्रोफेसर छैथ ओ रिटायर भऽ अपन पैतृक शहर पहिल बेर एला, तइसँ ऐबेरक आयोजन बड़ जोर सोरसँ भऽ रहल अछि। शहरक गण्यमान लोकसभ जे ऊँच-ऊँ पदपर कार्यरत छैथ, सभकेँ कार्यक्रममे शामील होइक बास्ते न्योँत पठाएल गेल। तइमे ऐबेर टी.वी सीरियलक जानल-मानल कलाकार जीतुराज जोहर सेहो हिस्सा लऽ रहल छथिन।

कार्यक्रमक दिन लगिचाइत गेल। शहरमे जगह-जगह बैनर-पोस्टर लगाएल गेल जे अमुख तिथिकेँ सांस्कृतिक कार्यक्रमक आयोजन जानल-मानल संगीत प्रेमी सबहक सहयोगसँ भऽ रहल अछि। मुदा गोनरकेँ ऐ बातक कोनो खबैर नै भेल छेलै।

शहरमे स्टेशन चौकपर बबाजी पानबला अछि। हिनका दोकानपर गामक बेसी लोक पान खाइले साँझ-बिहान जाइत-अबैत रहैए। बबाजीकेँ बूझल छैन जे गाम भरिमे गोनर सेहो नीक गबैया छी। मात्र दू दिन बँचल रहए, जब गोनर अनायास बबाजीक पानक दोकानपर गेल, बबाजीकेँ मनमे ठहकलैन आ जनैक जिज्ञासा भेलैन जे गोनर ऐ कार्यक्रममे भाग लेने अछि की नै। पुछलखिन-

"की रौ तूँ ऐ कार्यक्रममे हिस्सा लेने छेँ किने?"

गोनर जिज्ञासु भऽ विनम्रतासँ पुछलक-

"भैया हौ, के ई कार्यक्रम करबै छै हौ?"

बबाजी बूझि गेला जे गोनर भाग नै लेने अछि तैयो आस्वासन दैत बजला-

"अच्छा रूक, हम परोफेसर साहैबसँ बात करै छी।"

बबाजी मोबाइल लऽ कऽ नम्बर मिलौलैन आ बात करए लगला-

"हेल्लो सरजी, परनाम! हम बबाजी पानबला बजै छी।"

ओमहरसँ जे जबाव पुछने होन्हि, मुदा बबाजी फेर बजला-

"एकटा नवजुबक बड़ नीक गबैया छैथ।"

कनीए कालक पछाति फेरि बजला-

“लड़का तँ लोकले छैथ मुदा एक नम्मर गबैया छैथ!”
कनीए काल रूकि कऽ फेर आग्रहक स्वरमे बबाजी बजला-
“सर! देखियौ कनीए, मौका देल जेबक चाही।”
कनीकाल पछाति फोन डिसकनेक्ट भेल। गोनरकेँ बबाजी कहलखिन-
संस्थापर चलि जो, ओतए बजेलकौ हेँ। पहिने गीत गबबेतौ तब चुनाव हेतौ। अखने चलि जो।”
गोनरकेँ बसंती साइकिल रहबे करए, मुदा बूझल नै छल जे संस्थान छै केतए! तैयो पुछैत-पुछैत बिदा भेल। शहरक दच्छिन, बान्हक कछेरमे उजरा रंगक मकान, अगुआरे-पछुआरे नाना परकारक रंग-बिरंगक फूलक गाछसँ सजल-धजल फुलबाड़ी अछि। सड़कक कातमे साइनबोडपर लिखल अछि ‘महिला कल्याण संस्थान’। गोनर साइकिल नीचाँ धँसा संस्थानक प्राङगनमे पहुँचल, जैठाम दुचक्किया आ चरिचक्किया गाड़ीक पार्किंग लगल छल। बुझना गेल, एते सभकेँ-सभ भी.आई.पी. पहुँचल अछि। कातमे साइकिल लगा, एकटा हॉलमे लोक सबहक सुनगाम देखि भीतर घूसल। प्रोफेसर साहैबक नाओं पूछि गोनर लग गेल आ परिचए देलकैन। परिचए दइते बैसैक आदेश भेटलै। गीत गोनहार, नाच केनहार आ आनो आन कलाक प्रदर्शन केनहार सभ रहए आ रिहलसल होइत रहए। कनीए कालक पछाति गोनरसँ गीत गबबौल गेल, गोनरक सेलेक्सन नै हेबाक तँ कोनो सवाले नै रहए, आश्वासन भेट गेलै जे एकटा गीत गोनरो गौत।
गीतक आयोजन शुरू भेल। एक-सँ-एक भी.आइ.पी. सभ पहुँचल छला। विशिष्ठ अतिथि सभकेँ बैसैक बेवस्था मंचपर आ मंचक अगल-बगलमे कएल गेल रहए। ई आयोजन सार्वजनिक चंदा चिठ्ठासँ होइत रहए जइमे बड़का-सँ-बड़का पुजीबला लोकक धिया-पुता सभ भाग लेने रहए। सिवनाथ सहाय, जीतुराज जौहर आ स्थानीय सिविल अधिकारी सभ मुख अतिथिक रूपमे मंचपर आसीन भेल रहैथ।

गायन, वादन आ नृत्य ई तीनु संगीत छी एकर प्रस्तुति रसे-रसे हुअ लगल। हर-एक आदमी जे बाजि सकैए ओ गाइबो सकैए किएक तँ गायन बोलियेक एकटा उन्नत रूप छी। मुदा नव-सिखुआ गाबैया लेल समान रूपसँ निर्देशन आ निअमित रूपसँ अभ्यास जरूरी होइत अछि, जे बेसी-सँ-बेसी बच्चा सभमे ओतेक नै छैन। गायन एकटा एहेन काज छी जइमे स्वरक सहायतासँ संगीतमय ध्वनि निकालल जाइत अछि। सुवेवस्थित ध्वनि जे रस दैत अछि आ रसक अनुभूति करबैत अछि वएह संगीत कहबैत अछि। ऐ कलाक प्रदर्शन युद्ध, उत्सव, प्रार्थना आ भजनक समए मनुखक द्वारा गावन आ बजावनक माध्यमसँ कएल जाइत अछि। जे गाबैए ओकरा गबैया, जे नाचै ओकरा नचनियाँ आ जे बजबैए ओकरा बजनियाँ कहल जाइए।

प्रोग्राम होइत-होइत अदहा राति बीति गेल मुदा अखन धरि गोनरकेँ मौका नै भेटल। बखत केर पहिया बढ़ैत गेल आ राति दू बाजि गेल। विशिष्ठ अतिथि सभ घर दिस बिदा भेला, दर्शको सभ रसे-रसे जाए लगल, तब जा कऽ गोनरक नाओं एलोन्स कएल गेल। गोनर स्टेजपर आएल। गोनरक मुँहसँ राग लयात्मक रूपसँ बेवस्थित भऽ संगीतरूपी लहैर समुद्रक ज्वारि जकाँ पसरए लगल। जइ प्रस्तुतिमे कलाक प्रदर्शन हुअए आ जइ कलाकेँ संगीत या मनोरंजन कहल जाए, गोनरके कंठसँ वएह सुरीली कंठाध्वनि, ओहिना उत्पन्न हुट लगल जेना वाद्ययंत्रसँ सुसज्जित ध्वनि निकलैए।

जे सभ प्रोग्राम छोड़ि, घर दिस बिदा भेल रहए, ऊहो ओतै ठमैक गेल, डेग पाछू खींचए लगलै, सभ आपस आबए लगल आ जेकरा घरपर अबाज जाइत रहए, ओकरो जिज्ञासा हुअ लगल जे के एहेन गवैया छी आ केतक छी? किछु विशिष्ठ मेहमान सभ सेहो घूमि आएल छला। गोनरक गौला पछाति सभ हिनका लग बजा परिचए-पात पुछए लगल आ प्रसंशा सेहो करए लगल। गोनरकेँ आशा जगल जे कियो हिनका मदैत करैथ।

जौं शुद्ध मनसँ भगवानकेँ यादि कएल जाए तँ भगवानो कोनो रूपमे दर्शन देबे करै छथिन। वएह भेल, जीतुराज जौहर टी.वी कलाकार, गोनरकेँ आश्वासन देलकैन-

“दू महिना बाद अहाँ दिल्ली आउ, ओतए संगीतक ऑडिसन छै।”

गोनर हर्षित भऽ गेल आ जोर-सोरसँ ऑडिसनक तैयारीमे लगि गेल।OOO

बेटी

सोमनाथजी म्युनसीपल आँफिसमे पैंतीस बरख नोकरी केला पछाति रिटायर भेला। जीवनमे एक्को पाइ नजायज नै ग्रहन केलैन। सोनमनाथजी हृदैसँ पवित्र, शालिन, विनम्र आ दयाक भाव हिनका मुख-मण्डलसँ हरिदम झलकैत रहैए तँए हिनकर बिशेषता बेक्तिगत संज्ञा (उपनाम) मे बदैल गेलैन आ घरसँ लऽ कऽ आँफिस धरि लोक सभ हिनका सोनाजी कहि बोलबए लगलैन।
सोनाजीकेँ तीनटा सन्तान, बड़ दुइटा लड़का, जेठ बबलू तैपर सँ डबलू आ सभसँ छोटकी बेटी उषा छैन। उषाक बिआह नीक घरमे, इंजीनियर बड़सँ कऽ सम्पन्न केलखिन। जमाइबाबू मुजफरपुरमे नोकरी करै छथिन ओतै सरकारी अवास भेटल छैन, तइमे उषा सङ्गे रहै छथिन।
जेठका बेटा बबलूक किरदानीसँ दुनू परानी सोनाजीक मन बेथित छैन। बबलू इंजीनियरिंग करैले दिल्ली गेला मुदा हरियानाक एकटा लड़िकीक प्रेममे फँसि अपन जीवनक नैयाकेँ किनार कऽ लेलैन आ ओतै प्रेम-बिआह करि बसि गेला।
डबलू नागपुरमे बैंक मनेजर छथिन। हिनकरो बिआह भेला पछाति पत्नी सङ्गे आतै रहै छनिन। सालमे एक-आध बेर कभी-कभार घर अबै छथिन।
सोनाजी अपन जीवनसंगिनी ममताक सङ्ग बुढ़ाड़ीक पहिया जेना-तेना खिंचै छैथ। बेटा-पुतोहुक सुख हिनका नसीब नै होइ छैन मुदा उषा, बेटी रहैतो, बेटा जकाँ देखभाल करैए। सप्ताहमे एकबेर आबि कऽ

जरूरे देखि जाइत अछि। उषाक सोभाव पिताजीसँ बिरासतमे प्राप्त भेल छैन तँए मधुरो आ एक दोसरसँ अनुकूलो छैन।

सोनाजीक ई पैंसैठम बरख चलि रहल छैन। नोकरीसँ रिटायर भेल रहैथ तँ शरीरसँ स्वस्थ छला आ भरोसा छेलैन जे आगुओ नीके रहता, मुदा मनुख तँ मात्र इच्छा करैए, होइ तँ अछि वएह जे ऊपरबलाक मरजी रहै छैन। उषाक बिआहक पछाति दुनू बेटा दू जगह अपन-अपन घर बसा लेलकैन। सोनाजी दुनू परानीकेँ चिन्ता-फिकिर घरेड़ देलकैन। जीवन-शक्ति शिथिल भऽ गेलैन। हाथ-पएर धीमा पड़ि गेलैन। आँखिक रोशनी कमि गेलैन। कानोसँ कम सुनाइ दिअ लगलैन। पाचनतंत्र गड़बड़ा गेलैन आ दिल-दिमाग सेहो दुरूस नै रहलैन। मतलब बुढ़ापा हिनकर समस्या बनि गेलैन।

बेटा सभ कभी-कभार फोन घुमा हालचाल करैत रहै छैन। दोस्त-यारकेँ- दबाइ दोकनदार आ मोहल्लाक डाक्टर- सभकेँ फोन घुमा कहैत रहैए जे माए-बाबूकेँ देखैत रहबै।

सोनाजी दुनू गोटेकेँ ई परिपक्व अवस्था अछि जइमे ज्ञान, स्थिरता आ अनुभव छैन आ तहिक सहारे दुनू बेकती जीवन रूपी नैयाकेँ आगू खिंच रहल छैथ। ओना तँ बुढ़ापा भार नै होइत अछि मुदा जब खाएल-पीअल काया जड़जड़ भऽ जाइए आ परिवारक सदस्यक संग तालमेल नै रहैए तँ परीवारमे अपन उपयोगितापर विराम लगि जाइत अछि। वृद्ध लोकैनकेँ ऐ अवस्थामे सहायता आ सहयोगक जरूरत पड़िते छै। जे बेटा-पुतोहु अपन वृद्ध माए-बापकेँ सेवा करैए वएह जीवनक उत्तम कर्म करैए। एहेन पूत जे माए-बापकेँ जीबिते छोड़ि दइए आ अपनेमे मगन रहैए ओ ओहने काज करैए जेना धिया-पुता सभ बालुक रेतसँ महल बना लइए आ तैपर गाछक डारि-पात गाड़ि कऽ बगीचा बना लइए आ खुशी मनबैत रहैए मुदा जेकरा ज्ञान अछि ओ अपन जीवनक उत्तम कर्म करैसँ पाछू नै हटैए।

आजुक समाजमे बेकती अपन बाल-बच्चा संग परिवारमे रीझल रहैए। माए-बाप, बूढ़-पुरानक मान-मर्यादा, तेकर सेवा सत्कारकेँ साफे बिसैर

जाइए। ओहेन मनुख हरिदम पाबैक पाछू बेहाल रहैए मुदा जे हिनका लग प्राप्त वस्तु अछि ओकर उपयोग करनाइ नै जानैए। बूढ़-पुरान अनुभवी होइ छैथ तँए हिनका समाजमे विशिष्ट स्थान भेटबाक चाही। जे बेकती वृद्धक सेवा नै करैए, ओ कायर होइए आ कायर लोग काल्पनिक विचारक धनवान आ महा गप्पी होइत अछि। जाबे धरि वृद्धजनक आ जुबकक समाजमे तालमेल आ समानता नै बैसत ताबे धरि समाजिक आ सांस्कृतिक काजमे स्थइरूपसँ बिकास सम्भव नै भऽ सकत।

सोनाजी शरीरसँ कमजोर होइत गेला आ बेटा पुतोहुक सहायता आ सहानुभूति घटैत गेलैन। आब हिनका याद आबै छैन ओ दिन, जइ दिन बेदरूकिया सभकेँ ठेहुनापर लऽ घौआ-छु मल्ले-छु करैत पढ़ैत रहैथ 'लब घर उठे आ पुरान घर खसे...। खैर जे ऐ हाथसँ करैए ओकरा ओइ हाथसँ भोगए पड़ैए। अहु अवस्थामे सोनाजीकेँ रोज-मर्ड़ाक समान कीनए बास्ते हाट-बजार जाइए पड़ै छैन।

आइ सोनाजी सुति ऊठि कऽ शौचालय गेलखिन। होनीकेँ किछु भेनाइ रहैन, बाहर निकैलतै चक्कर आबि गेलैन आ शौचालयक दरबाजासँ टकरा कऽ खसि पड़ला। ममताकेँ गिरैक अभास भेलैन, भिरकाएल फाटककेँ ठेल देखलखिन सोनाजी ढनमनाएल असहाय अवस्थामे ओङ्गराएल आ कहैर रहल छैथ। ममता धबरा गेली आ उठबैक परियास केलखिन, हिला-डोला कऽ पुछै छथिन-

"बबलूक पपा! की भेल! केना खसलिऐ! बाजू ने?"

मुदा कोनो जवाब नै भेटलैन। सोनाजीकेँ मुहसँ छर-छर लेहू बहै छेलैन। ई देखि ममता हाय-बाप करए लगली, असगरि हिनकासँ उठि नै सकल, दौगल-दौगल दरबज्जापर जा हरेरामकेँ सोर पाड़लक, हरेराम दुनू परानी दौगल आएल, सोनाजीक ई दशा देखि हाँइ-हाँइ कऽ उठा-पुठा कऽ ओसार परहक खाटपर सुतेलकैन। सोनाजीक ई हलात देखि ममताक देह जेना केराक भालरि जकाँ काँपए लगलैन।

की करब! आ केना हएत! किछु नै फुड़ै छेलैन। हरेराम हड़बराइत बाजल-

“काकी! डागडरकेँ फोन करू!”

मुदा फोनक डायरी सोनेजी रखने छेलखिन। ममताकेँ भेटिते ने रहैन। हरेरामक पत्नी मंजू बुझि गेलखिन जे बेगरतापर एहेन छोटसन चीज नै भेटैत छैन, डाक्टरकेँ बजबैले दौगल-दौगल गेली।
मोहल्लेमे डाक्टर इकबालक घर छैन, एलखिन। सोनाजीक मुँहक ऊपरका दूटा दाँत नीचला ठोरमे भोंका गेल रहैन तइसँ मुहसँ लेहूक टघार चलै छेलैन। उपचार शुरू भेल, कनीएकाल पछाति सोनाजीकेँ होश एलैन। ममतोकेँ जानमे जान एलैन। डाक्टर इकबाल ढाढ़स दैत कहलखिन-

“अखन कोनो चिन्ता करैक बात नै छै, सोनाजीक ब्लडपेसर आ सूगर बढ़ि गेल छैन तइसँ, चक्कर एलैन मुदा समैसँ जाँच आ इलाज हेबाक चाही नै तँ हार्टएटेकक सम्भावना बाढ़ि सकैए।”

डाक्टर इकबाल पूर्जी लीखि हरेरामकेँ हाथमे दैत कहलखिन-

“ई दबाइ जल्दीए लऽ कऽ आउ, सोनाजीकेँ ठोरमे टाँका लगबए पड़त।”

तत्कालीन उपचार भेल। सोनाजीक मन पहिनेसँ नीक भेल। ममताक जीक मन हल्लुक हुअ लगल आ बेटा सभकेँ फोन लगबए लगली। जेठका बेटा बबलुकेँ पहिने फोन लगा घटनाक जानकारी देलखिन मुदा बबलू ऐ बातकेँ गंभीरतासँ नै लैत कहलकैन-

“केना खसि गेलौ? बाबूजी दबाइ खाइत रहौ की नै? तों केतए रही? दिन राति टेन्शन दइमे तूँ सब लगल रहै छँह।”

ऐ घड़ीमे बेटासँ एहेन तरहक जवाब सुनि ममताक मोह भंग भऽ गेलैन। फेर छोटका बेटा डबलूकेँ फोन लगा स्थितिक जानकारी देलखिन। डबलू पिताक हाल सूनि अस्वासन दैत बाजल-

"चिन्ता नै कर। डाक्टर साहेबसँ हम बात करै छी। दीपू दोस्तकेँ घरपर भेजै छियौ डाक्टरसँ देखा कऽ दबाइयो-दारू सभ लाबि देतौ। तूँ कान-खीज नै कर।"

ममताकेँ बँचल-खोंचल आस नीरास भऽ गेलैन। खैर हिनका सभसँ ओते आसो नै लगेने छेलखिन। आब बेटी उषाकेँ फोन लगेलैन। आन दिन उषा माए-बाबूकेँ फोन करि हालचाल जनैत रहए मुदा, आइ माइक फोन देखि चौंकली आ उत्सुकता पूर्वक बाजलि-

"हँ माय! हम सब नीके छी, मुदा बाबूजी केना छथिन?"

ममता जनैत छेली जे साँच बात बतेलासँ उषा बेसी घबरा जाएत तँए बातकेँ छोट करैत बजली-

"बाबूजीक तबीयत गड़बड़ा गेलौ आबि कऽ देखि जाही।"

मुदा भारी मन आ अवाजक थड़-थड़ाहैटसँ उषा भाँपि गेली जे साइत बाबूजीकेँ तबीयत बेसी खराब भऽ गेल अछि। घबराहैट तँ भेबे केलैन मुदा संयमसँ फोन रखि सोचए लगली जे की करी! फेर उठि कऽ बैग झारि, कपड़ा-लत्ता चोपतए लगली आ तुरंत नैहर अबैक ओरयान करए लगली। उषाकेँ एक सालक बेटी छेलैन तेकरो मुँह-कान पोछि तैयार कऽ एक काँखमे बच्चा आ दोसर हाथमे बैग उठा ओसारपर रखि घर दरबज्जामे ताला लगबए लगली। घरक चाभी बिसवासी पड़ोसीकेँ दैत पति इंजीनियर साहेबकेँ फोन लगेलकैन जे घण्टे भरि पहिले ड्यूटीपर नीकलले छेलखिन, इंजीनियर साहैब फोन रीसीभ करैत बजला-

"हँ बाजू, की बात अछि?"

उषाक मन तँ हड़बड़ाएले रहैन मुदा तैयो सम्हरि कऽ बजली-

"हम बाबूजीकेँ देखैले गाम जा रहल छी, माइक फोन आएल जे बाबूजी सिरियस छथिन। अहूँ साँझ धरि बाबूजीकेँ देखैले आबि जाएब।"

ई बात सुनि इंजीनियर साहैब चौंक गेला। पुछलखिन-

“अखन! अचानक! किए गाम विदा भेलौं?”

ताबे धरि उषा रिक्सापर बैसि बस स्टैण्ड दिस बिदा भऽ गेल छेली। हड़बड़ाइत बजली-

“अखन ओते गप हम नै करब, बूझि लियनु जे बाबूजीक हालत ठीक नै अछि।”

उषाकेँ हड़बड़ाएल अवाजसँ इंजीनियर साहैब बूझि गेला जे आब हिनका कोइ नै रोकि सकैए। भरोस दैत बजला-

“जाएब तँ जाउ, मुदा मनके अस्थीर केने जाउ, आ बाजू जे पाइ-कौड़ी किछु संगमे अछि किने?”

उषा-

“अहाँ पाइक चिन्ता नै करू, हमरा संगमे ओते पाइ अछि जइसँ, हम गाम जा सकै छी।”

इंजीनियर साहैब बात टोहियबैत पूछि देलकखिन-

“पाइ केतएसँ लाबलौं अहाँ? बजैत रहै छिऐ जे हमरा हाथमे एकोटा छिद्दियो ने रहैए।”

उषा सकपका गेली। सकपकेबो केना ने करितैथ? पतिक जेबीसँ बँचल-खूचल पाइ रोजे निकालिते रहै छेली। तैपर सँ ऊपरौसँ किछु ने किछु मांगि जरूरतिक समान कीनैबते रहै छेली आ सभसँ जरूरी काज माए-बाबूकेँ देखै बास्ते जाए पड़ै तइमे खर्चा-बर्चा तँ होइते रहै। ई बात इंजीनियरो साहैब जनिते रहैथ तँए उषा बातकेँ खोलैत बजली-

“अहाँक जेबी, जे रोज साफ होइत रहैए, वएह कोशलिया कऽ हम रखने रही, विशेष पाइक ओरीयान अहाँ साँझ धरि केने आउ।”

बेटा सभकेँ नै एलासँ ममता दुखी तँ छेली। मुदा ऊषाकेँ एलासँ निरासाक बादल छँटि गेलैन। साँझ होइत-होइत उषाक पति इंजीनियरो साहैब ऑफिससँ छुट्टी लऽ पहुँच गलखिन। विहाने भने

एम्बुलेन्ससँ सोनाजीकेँ दरभंगा लऽ गेलैन आ डाक्टर यू.के बिश्वाससँ इलाज चलए लगलैन। तत्काल किछु दबाइ शुरू काएल गेल, ऑक्सिजनक खगता सेहो पड़लैन आ दिनमे तीन बेर एकर परयोग हुअ लगल। विभिन्न तरहक जाँच करौल गेल। जाँचक किछु रिपोट तीन दिनक पछाति आएल आ किछु रिपोट हप्ता भरिक बाद आएत। जे रिपोर्ट आएल ओइमे बी.पी हाइ, सूगर बढ़ल आ संगे-संग हार्ट अटेकक सम्भावना बताएल गेल।

सप्ताह भरि इलाज चलैत रहल, तबीयतमे उतार-चढ़ाव होइत रहल, कखनो नीक जकाँ गप-सप्प करैत रहैथ तँ कखनो आँखि पथरा जान्हि, दम फुलए लगनि आ बेहोस भऽ जाथि। कखनो बेसुधि अवस्थामे अपने-आपसँ बड़बड़ए लगथि-

> “बबलू! कखन एलँह आ आ बैठ! कनियाँ! घर जा। अहाँ पोती छी हमर? आब! आब! बिस्कूट एकटा हमरो दिए ने! ऐ डबलू चाह लाबह! माएकेँ कहक चाह देत! ईह छिनरीक साँए! जेते खाएत नै तेते छिड़याएत!”

दुनू पजरामे बैसि उषा आ उषाक माए- ममता- बेना होंकि रहल छैन। सोनाजीक ई बड़बड़ेनाइ रोकैक बास्ते उषा सोनाजीकेँ छातीपर हाथ रखि हिला-डोला कऽ कहैए-

> “बाबूजी! बाबूजी! केकरासँ गप करै छिऐ?”

सोनाजी चौंकैत बजला-

> “ऊँह! नै नै गप करै छी। तोहर माए केतए छौ?”

सोनाजी किछुकाल ऊपर एकटकी नजैरसँ तकैत रहला। फेरि जेना कोनो आहैट चौंकैए तहिना चौंकैत बजला-

> “डबलू गाड़ीसँ उतरि गेल जा अगुआ कऽ लाबि लहक! काल्हिए कहै छी तोहर माए किछु बुझिते नै छँह।”

सोनाजीक स्मरण शक्ति छीन्न भऽ गेल रहैन। आँखिक रोशनी चलि गेल रहैन। रहि-रहि कऽ बिछौन होंथड़ए लगै छला। ई बेचैनीक

अवस्था देखि उषा आ ममताकेँ जी-मन उड़ैत रहैन। मुदा उषा साहसी, करवनो अपन घबड़ाहैटकेँ दृष्टिगोचर नै हुअ दैत रहैन। मनकेँ थिर करैत उषा बाजलि-

"बाबूजी! बाबूजी? एम्हर ताकू ने! हमरा चिन्है छिऐ? हम के छी कहू ते?"

सोनाजी आब देखि नै पबैथ। मुदा जखन स्मरण लौटैत रहैन तखन अवाज परेख नजैर घुमा-घुमा एम्हर-ओम्हर ताकि देखैक परियास करैत रहैथ। कहलखिन-

"हँ, चिन्है छी! उषा दाइ छी ने अहाँ? केतए छहक आगु आबह ने।"

आइ अस्पतालमे नअ दिन भऽ गेल रहैन। एकटा जाँचक रिपोट आइ आएत। दस बजे डाक्टर बजौने छथिन। उषाक पति आ उषा रिपोटक जानकारीले क्लिनीकपर पहुँचला। कनीए कालक पछाति कम्पाउण्डर अवाज देलकैन-

"सोनाजीक गारजियन डाक्टर साहैब से मिलिए।"

उषा दुनू परानी वेटिंग हॉलमे बैसल रहैथ, बोलाहैट सुनिते डाक्टरक चेम्बरमे पहुँचला, सोफा-कुरसी लागल रहए, बैसैक संकेतक पछाति दुनू गोटे बैस गेला। डाक्टर दुनू गोटेसँ सोनाजीक संग जे सम्बन्ध छेलैन तेकर परिचए लऽ कहलखिन-

"मरीजक हालत गम्भीर अछि, रीकौभरक सम्भावना नै बँचल, जाबै धरि छैथ, सेवा सत्कार करैत रहियनु।"

डाक्टरक ई बात सुनि, उषा बौक जकाँ भऽ गेल। मुँहपर रूमाल रखि सिसैक-सिसैक कानए लगली। उषाक पति सेहो अवाक् रहि गेला! तैयो जिज्ञासु भऽ डाक्टर साहैबसँ पुछलखिन-

"डाक्टर साहैब! केना एना भऽ गेलैन?"

डाक्टर कहलखिन-

> "फेंफड़ा हिनकर बिल्कुल खतम भऽ गेल छैन। ब्रेन ट्युमर सेहो बढ़ि गेलैन आ शरीरक आनो-आनो अंग सबहक कार्यक्षमता शिथिल भऽ रहल छैन।"

विभिन्न तरहक विमारी आ समस्याक विषयमे वार्तालापक पछाति निष्कर्ष यएह भेलैन जे सोनाजीक बिमारी ठीक हेबाक कोनो गुंजाइश नै छैन।

दुनू बेकती नीराश भऽ चेम्बरसँ बाहर एला, उषा बाहर निकैलते भोकारि पाड़ि-पाड़ि कानए लगली। पति साहस बढ़बैत कहलखिन-

> "अहाँ जौं एना कनब तँ माएकेँ की हएत? शान्त रहू, मनकेँ बुझाउ! जे हेबक छै से तँ भाइए कऽ रहत। सुझि-बुधिसँ काम लिअ! माएकेँ ऐ बातक जानकारी नै चलक चाही। हुनको सम्हारि कऽ आब अहींकेँ राखए पड़त ने। नै कानू। चूप रहू।"

उषो सोचलैन जे अखन हमरा कानबसँ नोकसान छोड़ि आर किछु नै हएत। कहुना मनकेँ बुझबैत चुप भेली। सोनाजी कमरामे बेडपर पड़ल रहैथ, बगलमे ममता पंखा हौंकैत रहैन, तइ बगलमे पजरा लागि उषा बैस गेली आ सोनाजीकेँ मुँह निहारए लगली।

बेटा सभ टाल-मटोल करैत तखन पिताक पराण छुटैकाल गाम आएल जखन सोनाजी केकरो ने चिन्ह सकै छेलैन आ ने केकरो देखिए सकै छला।OOO

भोला

आम तरहसँ देखल जाइए जे सतमाइक खिधांश जोर-सोरसँ लोग करैए। अगर कोनो बच्चाकेँ सतमाए रहैए तँ ओकरा लोकक सहानुभुति रहैत अछि। मुदा कोनो सोतेला बापक जिकिर केतौ होइत नै देखल जाइए। जखन कि भेद-भाव दुनूठाम होइत अछि। भोला अपन माए दुखनीक दोसर बिआहमे पछिलगुआ बनि आएल रहए। करम बुड़ल छेलैन दुखनीकेँ जे बिआहक दसे दिनक पछाति बिअहुआ घरबलाक देहान्त हेजाक बेमारीसँ भऽ गेल छल। पतिक गुजरलासँ दुखनीक नाता ओइ घरसँ टुटि गेल। मुदा आशाक किरण नअ मास अनहरिया बीतला पछाति भोलाक जनम भेलासँ फेरि चमैक उठल। दुखनीकेँ लागल जेना बेटाक जनमसँ बिअहुआ घर चिकैर कऽ सोर पाड़लकैन मुदा ईहो इजोत गहनलगुआ भऽ गेल, चानपर दाग लगि गेल। सोसराक लोक दुखनीकेँ स्वीकार नै केलक, कियो कुलच्छनी तँ कियो कुलनासनी कहैत सदाक लेल ठोकर मारि देलक। तइ दिनमे समाज आकि विज्ञान ओते प्रगति नै केने छल जे डी.एन.ए आकि आरो जाँचसँ साबित करितै जे भोला दुखनीक जाइज सन्तान छी।
समैक पहिया नाचैत गेल। दुखनी एकटा बेटा रूपी धनसँ सवुर केने जीनगीक सुख-दुखसँ तालमेल बैसबैत पाँच बरख काटि लेली। आब टोला-मोहल्ला आ समाजक लोक सभ दुखनीकेँ दोसर बिआहक गप-सप करए लगल। होइत-होइत खुर्शेला गामक मोहन दाससँ चुमौन सम्पन्न भेल, जेकर एकटा बेटी सोसरा बसै छेली आ एगो बेटा-पुतोहु भीन भऽ कऽ रहै छल। मोहनाक थोर-बहुत खेत आ चारिटा भैंस रहैन जेकर दूध बेचि गुजर-बसर करै छला। चुमौन भेलासँ दुखनी-मोहनाक

जीवन हरिअरी तँ घुमि आएल मुदा भोला जे पिताक खातिर जनमसँ बेलल्ला छल, ओकरा पिताक सुख नसीब नै भऽ रहल छेलै जे मोहनासँ भेटबाक चाही।

भोलाकेँ बालपनमे पिता भेटल, मुदा ऐ अबोध नेनाक जरूरतसँ हिनकर सतबाप साफ कऽ अनभिग छथिन। मोहनाक चुमौन करैत धरि दूटा कमौआ प्राणी घर आएल, दुखनी पत्नी बनि घर-आँगनक काम-काज सम्हारली आ भोला पोसल-पालल बेटा रूपमे भैंसक चरबाहि आ घासो भूसामे लगौल गेल। दुखनीक इच्छा छेलैन जे भोलाकेँ पढाबी-लिखाबी, तइ बास्ते गामक स्कूलमे नाओं लिखा देली। मुदा मोहनाक इच्छा नै छेलैन जे भोलाकेँ पढाबी। हिनक खिसियाएल रबैया भोलाक प्रति देखि दुखनीक सस-बस नै चलि सकल। ऐ खातिर बेर-बेर भोलाकेँ डाँट-फटकार मोहनासँ पड़ैत रहै। दुखनीकेँ तरे-तर टुसकेलापर भोला कहियो-काल नुका-छिपा कऽ स्कूल जाइत छल मुदा ई बेसी दिन नै चलि सकल। भोला एकदिन स्कूलसँ ऐबते धरि मोहनाक तामसपर चढ़ि गेल। मोहना तमसाएल दाँत पिसैत हूरकैत बजला-

> “बड़ नबाबक नाति छिही! केतौ बैस कऽ बाप-संगे कौड़ी खेलैत हेबही आ कहै छीही पढ़ैले गेल छेलिऐ! मरि किए नै गेलेँ ओतै? जब घास-ले जाइ छिही तँ तोरा घासे नै मिलै छौ। कहबी खुरपी भोँथ भऽ गेलै तँ बेँटे ढील्ला भऽ गेलै। पचासटा बहन्ना बनबै छँह। हट नजैरपर सँ झलमुहाँ!”

पाइरक चप्पल निकालि कऽ झट-झट सिन पीठपर बरसाए देलखिन। भोला धम्म सिन ओतै बैसि गेल आ छट-पटाइत बोमी पाड़ि कानए लगल। मोहनाक अपन बेटा नै रहैन तँए ममत नै, मुदा माता कुमाता नै भऽ सकैए, दुखनी दौगल एली आ भोलाकेँ उठा-पुठा कऽ पजिऔने अँगना लऽ गेली।

पुरुष प्रधान समाजमे स्त्री शब्द केतेक असुरक्षित होइत अछि से दुखनीक हालतसँ बूझल जाए सकैए। स्त्रीकेँ अपन अर्धाग्नी बनेलोपर

हुनकर मति मोहि कऽ पुरुख अपना अनुकूल बना लैत अछि। रसे-रसे धरक वातावरण बदलैत गेल आ मोहनाक आकर्षन दुखनीपरसँ घटैत गेल। धरक काम-कजक अलाबे माल-जाल आ खेतियो-पथारी दुखनीक माथपर बजरि गेल। मोहना भिनसरे भैंस दूहि, दूधक डोल बजार लेने जाइए, अनुमण्डलक पजरेमे दुर्गा दासक होटल अछि, जइमे दूधक उठौना लगल अछि, एतए एला पछाति गप-सरक्का संगे गाजाक लत सेहो पुड़बैत एक्केबेर दुपरियामे होइत घर अबै छैथ।

होटलक मालिक दुर्गा दास बेदरूकिया नोकरक खोजमे रहैथ जेकर जिकिर ओ मोहनासँ केलखिन-

> "आठ-दस बर्खक बेदरा काज करैबला गाममे जँ भेटत तँ नने अबिहऽ। तों तँ जानिते छहक होटलमे खेनाइ-पीनाइक कोनो कमी नहियेँ रहै छै। लूइरो-बूइध सीखतै आ पोसलो-पाललो तँ जेबे करतै?"

मोहनो भरोस दैत कहलखिन-

> "अच्छा दैखै छिऐ, नजैरपर एतै तँ नेने एबऽ।"

घर एलापर बेरमे मोहनक खियाल बेदरूकिया नोकरपर गेल, मने-मन सोचैत एला जे केकरा कहक चाही ऐ वास्ते? एकाएक मोहनाक धियान भोलपर गेल आ सोचए लगल। अन्तमे ई विचार केलैन जे भोलाकेँ होटलमे लगा देब सएह नीक रहत। घर ऐबते दुखनीकेँ गप-सप्पक झाँसा दैत कहलखिन-

> "भोलाकँ बजारमे नोकरी लगा दइ छिऐ। घरमे खाइ-पिबैक दिक्कत भऽ रहल छै। बजारमे रहतै तँ दूटा लूइरो-बुइध सिखतै, गाममे देखै छिऐ ने बौनाएल जाइए?"

दुखनी ऐ बातसँ राजी नै छेली मुदा मोहनक जिद्दक आगू हारए पड़लैन। अगिले दिनसँ भोला दुर्गा दासक होटलमे काम करए लगल। ऐ अबोध बेदराक वोनबाससँ एकटा आरो नेनाक मौलिक अधिकारसँ रोकि देल गेल। सोतेला माइक खिद्धांश तँ होइत अछि मुदा सोतला

बापोक हेबक चाही जेकर हकदार मोहन भेलखिन। स्कूली शिक्षा तँ बाल-बोधक मौलिक अधिकार होइत अछि जे आम लोककेँ समझमे नै आबि रहल अछि। परिणाम स्वरूप, अखनो बाल-श्रम अपना देशमे चरमपर अछि। गरीब घरक नेना-भुटका सभसँ बलपूर्वक आकि जोर-जबरदस्ती भारी-भरकम काज जेना स्टोर उत्पादनमे जूताक पौलिश, दोकानमे साफ-सफाइ, भोजनक ढाबा आ होटलमे जबरन बरतन-बासनक माजैक काज, चाह दोकानपर गिलास धोइक अलाबे आनो अनोपचारिक क्षेत्रमे काज कराएल जाइत अछि। घरेलु काज करैले सेठ-साहुकार सभ काम-काजी बेदराकेँ घरमे नुका कऽ राखैए, जइसँ सरकारी श्रम निरीक्षक आकि मीडिआक नजैरसँ बँचि सकए। ई सभटा काज न्यूनतम मजदूरीपर बेदरा सभसँ कराएल जाइए, बुझितो जे ई कानूनी जुलुम अछि। एकरा अनुचित आ शोषित मानल जाइए तैयो बहुत गरीब परिवार अछि जे अपन अबोध बेदराक मजुरीक सहारे भरन-पोषन करैए। कानूनो बनल अछि जे अठारह बर्खसँ कम उमेरक बालक मजूरी नै कऽ सकैए। मुदा कानूनक अनदेखी कएल जाइए आ भोला सनक नअ बर्खक बेदरासँ सतरह-सँ-बीस घण्टा काज कराएल जाइत अछि।

दुर्गादासक होटलमे अनुमण्डल आ बेंकोक स्टाफ जेना हाकिम, किरानी, चपरासी आ आनो भी.आइ.पी सबहक चाह, नस्ता, कल्लौ बनैए। किछु महानुभावक डेरापर चाह, नस्ता, खेनाइ पठाएल जाइए। दुर्गा दास सोभावसँ एक नमरक पोल्टिसबाज छथिन जहिँसँ कामकाजी बेदरा सभसँ गप मारि काज करबै छैथ। जरूरी पड़लापर डाँट-फटकार आ लप्पर-थप्परसँ सभकेँ सकपकेने रहै छैथ। होटलमे छहसँ दस बर्खक आरो चारिटा बाल-मजदूर काज करैत छल। भिनसरबाक चारि बजैत धरि सभटाकेँ हुरपेट कऽ जगाएल जाइए आ बरतन-बासन, चुल्हा-चौकीक माँज-मजबैल, निपा-पोतीसँ झार-पोछक काजमे लगाएल जाइए। कोइ चाह लऽ डेरे-डेरा पहुँचाबैए तँ कोइ जलखै, खेनाइ बनाबैमे लगि जाइए।

करवनो-काल सभ बेदरामे कोनो-कोनो बातपर टोना-मानीसँ झगड़ा-झाँटी भऽ जाइत अछि, तइ घड़ीमे दुर्गाकेँ अपन सकत मियादि देखबऽ पड़ै छै, जारनि लऽ कऽ झँटियेबो करैए। खेनाइमे सभटाकेँ बसिया भात, टटाएल रोटी, महकौआ तीमन आ बँचल-खूचल तरकारी दैत बजै छथिन-

> "रै छौड़ा सभ अते नीक चीज तँ तोहर बापो-ददा नै खेने हेतौ। खाइ जाइ जो मन लगा कऽ।"

दुर्गा दासक एकलौता बेटा- अमर- दरभंगामे पढ़ैत अछि। जहिया कहियो ओ गाम अबैत अछि तँ जाइ घड़ीमे टीसनपर पहुचबैक जिम्मा भोलेकेँ रहैत अछि। आइ अमर दरभंगा विदा भेल। दस-दस किलोक गहुम आ चाउरक मोटा भोलाक माथपर आ कन्हापर बैग लटकेने टीसन मुहेँ विदा भेल जे करीब कोस भरि हटि कऽ अछि। रस्तामे भारीसँ भोलक कन्हा-पजरा ऐंठने जाइत रहै मुदा गाड़ी छुटैक डरे केतौ जिराइयो नै सकल। टीसन पहुँचते रेलगाड़ी ससरऽ लगलै। अमर लपैक कऽ पौदान पकैड़ चढ़ल। भोला नीचासँ सभटा मोटा-चोटा आ बैगो जेना-तेना अमरकेँ पकड़ा आ अपन भाड़ उतारलक। भोलाक माथक बोझ उतरिते मन हल्लुक हुअ लगलै, मुदा घुरन्ती-डेग नै उठि रहल छै भोलाकेँ। मन भेलै किछुकाल जिरा ली। कन्हा आ गरदनि सेहो ऐंठने जाइत रहै। गाछक चबुतरापर धम्म दऽ बैस कऽ हाँफए लगल। किछुकाल बैसला पछाति आलस आबि गेलै आ ओतइ ओंघरा कऽ सुति रहल। साइत एते निचेनक नीन कहियो नै सुतल छल। ओ नीनक महासागरमे हेला मारऽ लगल। चारि घण्टाक कड़गर नीन खींचला पछाति जखन गाछक छाहैर घुसकि कऽ दूर हटि गेल आ देहपर दुपहरियाक रौद लागए लगलै तखन जा कऽ आँखि खुजलै। भूखो जोरसँ लगि गेल रहै, आँखि मिरैत होटल दिस विदा भेल।
ओमहर दुर्गा दास तामससँ आगि अंगोरा होइ छला। भोलाकेँ देखिते मातर तरबामे लहैर दिअ लगल, गारि-बात दैत घौलाइत हूरकैत भोलाकेँ कहलखिन-

“रे सार! गेलही तँ मरि गेल रही? की बाप पकैड़ लेने छेलौ? भुख लगलौ तँ दौगल एलही। नमक हरामी कहीं कऽ! मुलुर-मुलुर केना तकैए सार!”

बगलसँ करमीलक छड़ी उठा आ भोलाक पीठपर सटाक-सटाक खिंचए लगलखिन। भोला ओतै तिलमिलाइत लूद सिन बैसि रहल आ बाप-माए चिचियाए लगल-

“गै माएऽऽ... हौ बापऽऽ... मरि गेलियौ गैऽऽ... माए गै माएऽऽ...”

खिसियाले मुहेँ दुर्गा दास फेरि बजला-

“सार तूँ हमरा होटलमे टपि नै सकै छेँ। जो जइ बाप लग जेमे। देखै छियौ तोरा के रखै छौ आ के खेनाइ दइ छौ।”

घण्टा भरि भोला ओतै कनैत रहल। रहि-रहि कऽ दुर्गा दास हूरैक-हूरैक मारैले छुटैत रहैथन आ बजैत रहथिन-

“भगलेँ कि नै सरबा? एने की टक-टकी देने छीही? आब खाले? टपऽ तँ देबौ नै आ खेनाइ के देतौ? चलि जाइत रह जतए जेबाक छौ।”

भोलाकेँ बुझना गेल आब निश्तुकी नै रहए देता आ ने खेनाइए भेटत। उठि-पुठि कऽ कोसी प्रोजेक्टबला खरंजा पकड़ने एस.डी.ओ साहैबक अवास दिस विदा भऽ गेल। मन्हुआलए-सन्हुआलए आँखिक नोर पोछैत भोला एस.डी.ओ.क अवासक आगूसँ जाइत छल तखने भीम बहादुरक नजैर भोलापर गेलैन। भीमबहादुर एस.डी.ओ. साहैबक भनसिया, जे दयालु प्रवृतिक नेपाली पहाड़ी जातिक छैथ। बहादुर भोलकेँ जानिते रहैथ पुछलखिन जे की भेलौ, किए कनै छीही, केतए जाइ छेँ?

भोला हिचैक-हिचैक कऽ सभटा बात बतेलक-

“हमरा नै रखतै। मालिक कहलखिन भागि जो, नै रहए देबौ।”

भीमबहादुरक उमेर पचास-पचपनसँ कम नै हेतैन मुदा खुश मिजाज आ दयालु प्रवृतिक लोक छैथ। भोलाकेँ केम्पसक भितर लऽ गेलखिन आ खाइले दूटा रोटी संग कनी तरकारी देलखिन जे बँचल छेलैन। भोला भोरुके खेलहा, भूखसँ लहालोट हरबे करए। मुदा ऐ रोटीक पैनठेगहासँ देहमे हूबा एलै। किछुकाल धरि ओतए बैसल रहल। एस.डी.ओ पाठक जीक दुनू सन्तान नन्दन सात बर्खक आ नेहा चारि बर्खक अछि जे केम्पसमे बैट-बौल खेलाइत रहए। भोलो दौग-दौग कऽ संग दिअ लगल। साँझ होइत धरि पाठक जीक जीप केम्पसमे प्रवेश केलक संग लगल किछु गाम-घरक नेता लोकैनक हुजुम सोहो जुटए लगल। गप-सरक्काक बीच सभ नेतागण अपन-अपन काज करा विदा होइत गेला। बीच-बीचमे पाठक जीक नजैर तीनु नेनापर सेहो जाइत रहैन जे प्रसन्नचित मुद्रामे खेलैमे मग्न अछि। भोला एस.डी.ओ साहैबक कार्यालयमे चाह पहुँचबैले जाइत रहैन तँए चिन्हतो रहथिन। मुदा भोलाकेँ एतए देख पाठकजी दुविधामे छला। पाठकजी बहादुरसँ पुछलखिन-

"बहादुर, ई लड़का तँ दुर्गादास-होटलक लगैए, ई एतए केना आएल?"

भीमबहादुर सभटा बातक जानकरी दैत आग्रह केलखिन-

"साहैब, धिया-पुता जाइत छिऐ, भगा देने छै, राति-विराति केतए जेतै, आइ भरि एतै रहे दैतिऐ तँ नीक होइतै।"

पाठकोजी नेक विचारक लोक, हँ भरैत बजलखिन-

"रहऽ दहक की हेतै? धिये-पुता तँ छिऐ।"

बहादुर गरीबीक दिन देखने। तँए मनमे गरीब लोकक प्रति दजा आ सहानुभूति भरल छैन।

बहादुरमे दूटा नीक गुण अछि, पहिल ई जे जब केतौ भूखलकेँ देखैत तँ खेनाइक आग्रह जरूर करैत, दोसर ई जे दोसरक बाल-बोधकेँ अपना जकाँ सिनेह दैत छथिन। एस.डी.ओ- पाठकोजी- तहिना

मिलनसार आ दयालु प्रवृतिक लोक छथिन, तँए दुनू गोटेमे नीक जकाँ बनै छैन। भिनसर भने बहादुरक दैनिक काजमे भोला संग दिअ लगल। दस बजैत पाठकजी ऑफिस विदा भेला। बहादुर अपने संगे भोलोकेँ जलखै करबैत गप-सप्पमे पुछलखिन-

"होटल धुमि कऽ जेमे की गाम?

भोला सकपका गेल, किछु नै बाजल, मुदा बहादुर ऐ चुप्पीकेँ बुझै खातिर फेर पुछलखिन-

"होटल जेबाक मन नै होइ छौ?"

भोला मुँह लटकेने बाजल-

"नै जेबै, दुर्गा मालिक बड़ मारै छै। खेनाइयो भरि पेट नै दइ छै आ भगाइयो देलक, कहलक आब तोरा नै रखबौ।"

बहादुर-

"तूँ अपना बापकेँ किए नै कहै छी?"

भोला-

"हमर बाबा एक बरखसँ दूध लऽ कऽ नै अबै छथिन। दुर्गा मालिक कहलखिन, बाबू सबटा भैंस बेचि लेलकौ।"

बहादुर-

"माइयो भेँट-घाँट करैले नै अबै छौ?"

भोला-

"भेँट नै केलकै। एकबेर खजुरी कका दिअए समाद पठेने रहै भेँट करि जाइले। मुदा दुर्गा मालिक नै जाए देलखिन आ हमरा गाम देखलो नै छै।"

एकबेर फेरि बहादुरकेँ भोलापर दया लगलैन, जे कि मनुखक मूल सोभावो छी। ओना तँ सभ धर्मक पोथीमे बतौल गेल अछि, जे लोकैन कनैत-कल्पैत नेना-भुटका, भूखल, बेमार आ बूढ़-पुरानपर दया-दरेज नै करि सकैए, ओकर ई मनुखक जीनगी बेकार होइत अछि। मनुखक

पुनरावृतिक लक्षण अछि, जनम भेनाइ, खेनाइ-पिनाइ, पलनाइ-बढ़नाइ, बिआह-दानसँ बंश-बृद्धि करैत परिवारकेँ आगू बरहेनाइ आ फेर मरि जेनाइ। ई जीवन तँ पशु आ पक्षियो जीबैए। तखन मनुख आ जानवरमे की फरक रहत? दया मनुखक सभ गुणमे श्रेष्ठ अछि जे मनुखमे रहबाक चाही।

भीमबहादुरक मनमे विचार उठल, साहैबसँ गप करि भोलाकेँ अहीठामक काजमे रखि लेब तँ एकटा बेदराक उपकार भऽ जाइत! साँझ पड़ैत पाठकजी एलखिन। काजसँ फूर्सत भेला पछाति बहादुर पाठकजी सँ बिनती करैत भोलाक खातिर गप कहलखिन जेकरा पाठकजी स्वीकार केलकैन।

भोला घरक काजमे संग-साथ दिअ लगल। मौका भेटलापर नन्दन-नेहा संगे पढ़ैओले बैसि जाइत रहए। कनी दिन बीतला पछाति बहादुर भोलाक माए-बाबूकेँ समाद पठेलखिन, भेँट करैले।

डेढ सालसँ दुखनी बेटाक सोगमे चिन्तीत छेली। मुदा ई खबैर जे भोला एस.डी.ओ साहैबक घरमे काज करैत अछि, सुनि सुप सन कलेजा भेलै। अगिले दिन दुखनी दौगल एली। दू बरिसपर भोलाकेँ देखिते दुखनीकेँ खुशीक ठेकाना नै रहलै। गप-सपसँ पता लागल जे भोलाक सतबाप, मोहना भैंसपर सँ खसि पड़ल आ डाँर टुटि गेल। पछाति सभटा भैंसकेँ बेचए पड़लै। तहियासँ आइ तक मोहना बेमारे रहै छैथ, कोनो काज-राज हिनकासँ नै भऽ रहल छैन।

भेँट-घाँट भेला पछाति दुखनी गाम दिस विदा हुअ लगल मुदा एस.डी.ओ साहैबसँ भेँट करैत निहोरा केली-

> “हूजूर, आइसँ अहीं ऐ निभोगाक माइ-बाप छिऐ। अहींक नून खा कऽ एकर भाग चमकतै।”

पाठकजी भरोस दैत कहलखिन-

> “भोलासँ अहाँ निफिकिर रहू। खर्चा-पानीक दिक्कत हएत तँ हमरा खबैर करब।”

पाठकजी भोलाक हाथे पाँच सए टका आ एक सेट कपड़ा दुखनीकेँ विदागरीमे देलखिन। दुखनी हँसी-खुशीसँ गाम दिस विदा भऽ गेली।ooo